शब्दशिखर

अंक 11, वर्ष 2021

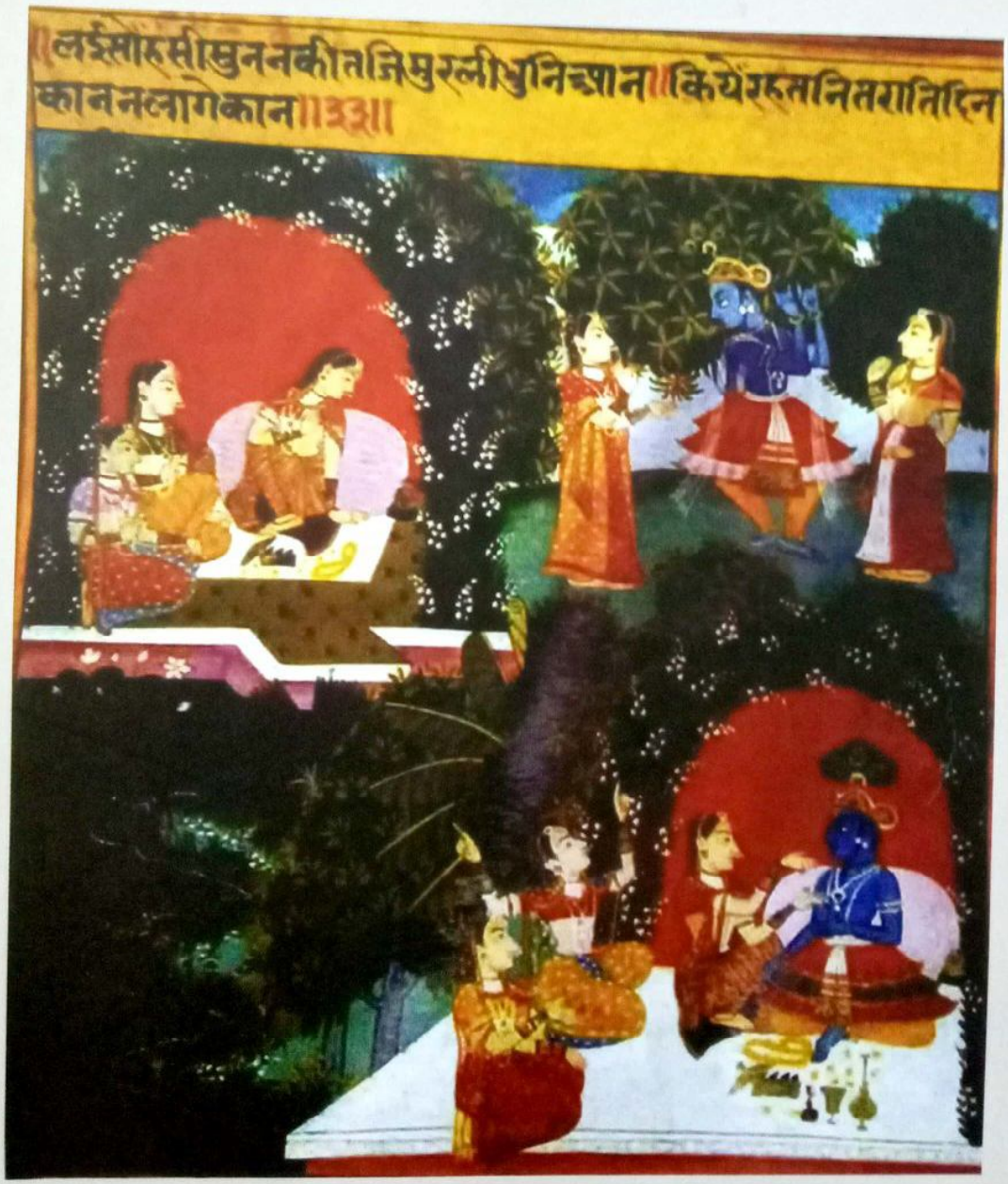

Scanned by CamScanner

शब्दशिखर

साहित्य, संस्कृति एवं जनचेतना की पत्रिका

ISSN : 0976-5719

अंक 11
जनवरी, 2021

संस्थापक
राधिकाप्रसाद त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

उप–संपादक
सुंदरम शांडिल्य

प्रकाशक
साहित्य–संस्कृति संस्थान, नहरबाग, अयोध्या–224001 (उत्तरप्रदेश)
रेखांकन : अर्चना द्विवेदी, सागर
शब्द संयोजन : एक्टिव कम्प्यूटर्स : नमकमंडी, कटरा बाजार, सागर (म.प्र.)
सम्पादकीय पत्र व्यवहार : कथायन, पटेल का बगीचा, यादव कालोनी, सागर (म.प्र.)–470001
दूरभाष : (07582) 228410, मोबाइल : 09425656284, ईमेल–aptripathihindi@gmail.com
मूल्य : एक प्रति 50 रू., चार अंक 200 रू., आजीवन 2000 रू.
सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के नाम से किए जाए।
सागर से बाहर चैक में बैंक कमीशन के 30 रू. अतिरिक्त जोड़ें।
संपादन–संचालन एवं प्रकाशन : अवैतनिक, अव्यावसायिक एवं वार्षिक।
प्रकाशित रचनाओं/आलेखों आदि की रीति–नीति या विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।
समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र अयोध्या (उ.प्र.) होगा।

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

सम्पादकीय / 3

सामयिक चिंतन

साहित्य, संस्कृति और वर्चस्वी तत्त्वों के आनुषंगिक प्रक्षेपण : **शशिभूषण द्विवेदी / 5**

वर्तमान समय में सृजन की चुनौतियाँ : **करुणाशंकर उपाध्याय / 11**

संस्कृति एवं कला

रामायण का सत्य और महाभारत का धर्म : **अम्बिकादत्त शर्मा / 15**

काव्य और चित्रकला का अंतर्संवाद : कानन लागे कान : **श्यामसुंदर दुबे / 29**

संस्मरण

उसने ये जाना कि गोया ये भी मेरे दिल में था : **सूरज पालीवाल / 32**

बातचीत

हिंदी का भला भारत सरकार ने नहीं, बॉलीवुड ने किया है! : **हंस हार्डर से पंकज पराशर / 40**

डायरी

मुक्तिबोध : भारतीय लोकतंत्र के आलोचक : **बलिराज पाण्डेय / 45**

विशेष कवि

बारह कविताएँ : **राकेश मिश्र / 50**

राकेश मिश्र की कविताएँ–जीवन सत्य का खुरदुरापन : **रमा / 55**

आलेख

सभी प्रकार की परिधियों के अतिक्रमण का सहज साध्य प्रयास : **ए. अरविंदाक्षन / 60**

प्रतिबद्धता केवल विचार नहीं है : **लक्ष्मी पाण्डेय / 63**

विश्वनाथप्रसाद तिवारी की कविता : मानवीय उदात्तता की संवेदनशील आकांक्षा : **व्यासमणि त्रिपाठी / 67**

विचार समृद्ध सहज कविता का वैविध्यपूर्ण अनुभव लोक : **कृष्णचंद्र लाल / 73**

इक्कीसवीं सदी की कहानी–पहला दशक : आख्यान में ढलता समय : **नीरज खरे / 81**

परिपृच्छाधर्मी अज्ञेय का आलोचना–बोध : **आशुतोष / 86**

कविता

तुम्हारी जय ऐसी न थी, मैं जब खुश होता हूँ, रुमाल, यह पृथ्वी हमारा घर है : **नरेन्द्र पुण्डरीक / 93**

कहानी

इस तरह : **महेश कटारे 'सुगम' / 95**

यात्रा : **मीरा चन्द्रा / 98**

लघुकथा

ताबीज, एहसास : **दिनेश चमोला 'शैलेश' / 14, 72**

सफ़लता : **राम स्वरूप दीक्षित / 85**

व्यंग्य

नया बाप मिलने की खुशी : **रामस्वरूप दीक्षित / 101**

लोक

भिखारी ठाकुर और उनका लोकनाट्य बिदेसिया : **दर्शन पाण्डेय / 102**

पुर्नपाठ

जटिल जिंदगी की सरल कहानी–परदा : **विवेक श्रीवास्तव / 107**

मनुष्य के महत्त्व की कथा–कर्मनाशा की हार : **रंजना पाण्डेय / 110**

समीक्षा

गिरहें खोलतीं कहानियाँ : **लक्ष्मी पाण्डेय / 113**

संघर्ष भरे जीवन की आत्मकथा : **अम्बिका प्रसाद / 118**

Scanned by CamScanner

प्रतिबद्धता केवल विचार नहीं है

लक्ष्मी पाण्डेय

केदारनाथ सिंह ने अज्ञेय के लिए कहा है कि– "वे इतने अच्छे गद्यकार न होते तो शायद इतने बड़े कवि भी न बन पाते। "इस कथन की व्याख्या करूँ तो यह प्रतिध्वनित होता है कि हर मनुष्य को अपने दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। रचनाकार का दायित्व सामान्य मनुष्य से कहीं अधिक होता है। वह समाज और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध होता है। केदारनाथ सिंह यूँ तो एक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं किन्तु विविध ज्वलन्त विषयों पर लिखे गए उनके निबन्ध, आलोचना, व्यक्तिपरक आलोचनाएँ पढ़ने के पश्चात् कह सकती हूँ कि वे कवि से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ आलोचक और गद्यकार हैं। वे ठेठ भारतीय नागरिक हैं। भारतीय संस्कृति की जड़ें सम्पूर्ण ग्राम्य चेतना के साथ उनके आधुनिक हृदय की भूमि में पैठी हुई हैं। यही कारण है कि गाँव, समाज और परिवार को वे अपने जीवन में विशेष स्थान देते हैं। मिथिलेश श्रीवास्तव द्वारा लिए गए साक्षात्कार में उन्होंने परिवार के लिए कहा कि– "मेरे पारिवारिक जीवन में और सृजन कर्म में कभी कोई द्वन्द्व नहीं रहा। परिवार मेरे रचनात्मक विकास या जाति को आधार देने वाली एक वास्तविकता है। परिवार समाज की वह पहली संस्था है जो हमें बृहत्तर समाज के लिए तैयार करती है। ....जो साहित्यकार इस संस्था को नहीं जान पाता, उसके अंदर एक गहरी रिक्तता रहती है। अगर वह उस खालीपन को नहीं भर पाता है तो उसकी संवेदना में एक विच्छिन्नता रहती है।" (मेरे समय के शब्द–पृ.–198)

केदारनाथ सिंह की रचनाओं में उनकी अविच्छिन्न संवेदना की अनुभूति होती है। वे हर वर्ष एक– डेढ़ महीने के लिए गाँव चले जाते थे ताकि विस्थापन की पीड़ा कम हो सके। उन्होंने उपरोक्त साक्षात्कार में इस पीडा को व्यक्त किया है– "घर छोड़ने की पीड़ा बड़ी तीव्रता के साथ पहली बार तब महसूस हुई जब मैं दिल्ली आया। विस्थापन का दर्द महानगर से सीधे जुड़ा हुआ है। गोरखपुर उस अर्थ में बाहर नहीं है, जिस अर्थ में दिल्ली है। कहने का अर्थ यह है कि दिल्ली से पहले जहाँ भी मैं रहा (बनारस) मुझे विस्थापन की पीड़ा नहीं हुई। 1976 में मैं दिल्ली आया। अपनी बनावट, अपनी सोच, अपने रहन–सहन, अपनी संवेदना में मैं ठेठ पुरबिया था। दिल्ली में आने के बाद मैं उससे कट गया।"(उपरोक्त–पृ.–199)

केदारनाथ सिंह विस्थापन की पीड़ा और भोजपुरी बोलने की लालसा के चलते ही 'मातृभाषा' जैसी कविता लिखते हैं जिसे पढ़ते हुए लगता है जैसे अपनी मिट्टी से भेंटना, गाँव लौटना उनके लिए पुनर्जीवन की तरह होता रहा होगा –

जैसे चीटियाँ लौटती हैं/बिलों में
कठफोड़वा लौटता है/काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक/
लाल आसमान में डैने पसारे हुए/
हवाई अड्डे की ओर/
ओ मेरी भाषा/मैं लौटता हूँ तुम में/
जब चुप रहते–रहते/अकड़ जाती है मेरी जीभ/दुखने लगती है/मेरी आत्मा... ।"

'लौटना' प्रतिबद्धता है अपनी जड़ों के प्रति, संस्कारों–मूल्यों, पारिवारिक–सामाजिक दायित्वों के प्रति ..... । जहाँ प्रेम है, निष्ठा है, सम्बन्धों–मूल्यों के प्रति आस्था है वहाँ प्रतिबद्धता होगी ही... । केदारनाथ सिंह के प्रतिबद्धता सम्बन्धी विचार स्पष्ट नहीं हैं। उन्होंने कहा है–"आस्था एक विश्वासमूलक प्रत्यय है, जबकि प्रतिबद्धता एक ऐसी बौद्धिक अवधारणा, जिसका रूख कर्म की ओर है। कृष्ण या राम के प्रति सूर या तुलसी की प्रेम की जो एकनिष्ठ घोषणा है, उसे अलंकारिक रूप में चाहे कोई प्रतिबद्धता कह ले, पर इस शब्द को जो एक ऐतिहासिक अर्थ मिल गया है, उसके अनुसार वह प्रतिबद्धता नहीं है।" (उपरोक्त–पृ.–133) मुझे लगता है यह प्रतिबद्धता की अधूरी व्याख्या है। बेशक

Scanned by CamScanner